International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

स्वामी दयानंद सरस्वती एक महानशिक्षाविद, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्रवादी

Bhanu Prakash Soni

Assistant Professor-History
R.D. Girls College Bharatpur

स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान शिक्षाविद, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्रवादी थे। वे ज्ञान के एक प्रबल योद्धा, भगवान की सृष्टि के रक्षक, और समाज की नई संरचना के मूर्तिकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनका सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज की स्थापना है, जिसने शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में क्रांति ला दी। स्वामी दयानंद आधुनिक भारत के उन प्रमुख सुधारकों और आध्यात्मिक शक्तियों में से एक हैं, जिन्होंने भारत को उसके सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक किया।दयानंद सरस्वती के विचार और दर्शन उनके प्रमुख ग्रंथ *"सत्यार्थ प्रकाश"*, *"वेद भाष्य भूमिका"*, और *"वेद भाष्य"* में प्रतिबिंबित होते हैं। इसके अतिरिक्त, उनके द्वारा संपादित *"आर्य पत्रिका"* ने भी उनके विचारों और सुधारवादी दृष्टिकोण को प्रसारित किया। आर्य समाज के संस्थापक के रूप में, स्वामी दयानंद ने आधुनिक भारत के राजनीतिक विचारों में एक अद्वितीय स्थान बनाया।जब भारत के शिक्षित युवा यूरोपीय सभ्यता के सतही पहलुओं का अनुकरण कर रहे थे और भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत को उपेक्षित कर, इंग्लैंड की राजनीतिक व्यवस्थाओं को भारत में अपनाने की वकालत कर रहे थे, उस समय स्वामी दयानंद ने पश्चिमी वर्चस्व का कड़ा विरोध किया। उन्होंने भारतीय समाज को आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी बनाने के लिए भारत-आर्य संस्कृति और सभ्यता के मूल्यों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया।

स्वामी दयानंद मूर्तिपूजा, जातिवाद, कर्मकांड, भाग्यवाद और नशाखोरी के प्रबल विरोधी थे। वे दबे-कुचले वर्गों के उत्थान के लिए सक्रिय रूप से खड़े हुए। उनके विचार हिंदू धर्म और वेदों के आधार पर भारतीय समाज के पुनर्गठन पर केंद्रित थे। उन्होंने इस्लाम और ईसाई धर्म की आलोचना करते हुए, हिंदू समाज के विभाजित संप्रदायों को एकजुट करने की वकालत की।राजनीति के क्षेत्र में, दयानंद सरस्वती ने राज्य के सिद्धांत, सरकार के प्रारूप, तीन-विधान सरकार के कार्य, और कानून के नियमों पर अपने विचार व्यक्त किए। उनके ये विचार न केवल भारतीय राजनीति के मूल्यों को दिशा प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें भारतीय राजनीति में उच्च विचारधारा का प्रतिपादक भी बनाते हैं।

मुख्य शब्द: समाज सुधार, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राजनीतिक विचार, वर्चस्व, मूर्तिपूजा, योगदान, सुधारवादी दृष्टिकोण, वेद भाष्य।

प्रस्तावना

स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान शिक्षाविद, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्रवादी थे। वे ज्ञान और सत्य के प्रचारक, धर्म और संस्कृति के योद्धा, और समाज के नवनिर्माण के मूर्तिकार के रूप में प्रतिष्ठित थे। उनका

सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज की स्थापना था, जिसने शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाया। स्वामी दयानंद उन महान सुधारकों और आध्यात्मिक शक्तियों में से एक थे, जिन्होंने आधुनिक भारत को उसके सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति जागरूक किया।आर्य समाज आंदोलन के माध्यम से, दयानंद सरस्वती ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने और शिक्षा के महत्व को स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। डॉ. एस. राधाकृष्णन के अनुसार, "आधुनिक भारत के मंदिरों में, जिन्होंने लोगों के आध्यात्मिक उत्थान और देशभक्ति की भावना को प्रज्वलित किया, स्वामी दयानंद ने अद्वितीय स्थान प्राप्त किया है।" उनकी प्रेरणा और नेतृत्व ने आर्य समाज के अनुयायियों में असाधारण शक्ति और समर्पण का संचार किया। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज के योगदान को आज भी उच्च सम्मान के साथ याद किया जाता है।

जीवन परिचय

स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 1824 में गुजरात के मोरबी राज्य के टंकारा गांव में एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता करसनजी तिवारी एक शिव मंदिर के पुजारी थे। बचपन में स्वामी दयानंद का नाम मूलशंकर था। अपने पिता की देखरेख में, उन्होंने वेद, संस्कृत व्याकरण और धार्मिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया।

स्वामी दयानंद के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब उन्होंने जीवन की क्षणभंगुरता और असारता का साक्षात्कार किया। अपने जीवन के प्रारंभिक अनुभवों और चार साधारण दृश्यों—जैसे कि गौतम बुद्ध के जीवन में हुआ था—ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया। इन घटनाओं ने उनके दृष्टिकोण और जीवनशैली को पूरी तरह बदल दिया, और वे सत्य की खोज में निकल पड़े। यही खोज उन्हें आर्य समाज के निर्माण और समाज सुधार के मार्ग पर ले गई।स्वामी दयानंद का जीवन भारतीय संस्कृति और समाज के पुनर्जागरण का प्रतीक है, जिसने लोगों को आध्यात्मिक जागरूकता और समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित किया।

जब स्वामी दयानंद चौदह वर्ष के थे, तो उन्होंने शिवरात्रि के दिन परिवार के अन्य सदस्यों के साथ उपवास रखा। रात के समय, जब परिवार के लोग शिव की पूजा करने के बाद सोने चले गए, मूलशंकर (स्वामी दयानंद) ने जागते हुए विचार किया। उन्होंने सोचा कि अगर एक मूर्ति अपने भक्तों के लिए कुछ भी रक्षा नहीं कर सकती, तो वह पूरी दुनिया की रक्षा कैसे कर सकती है? यह विचार उन्हें मूर्ति पूजा की निरर्थकता के प्रति जागरूक कर गया। इस अनुभव ने उनकी अंतरात्मा को जागृत किया और वे हिंदू धर्म के रूढ़िवादी पक्ष के खिलाफ एक कट्टर धर्मयुद्ध के पक्षधर बन गए।स्वामी दयानंद के स्वतंत्र विचारों से उनके पिता चिंतित थे, और उन्होंने उन्हें पारिवारिक जीवन में समाहित करने के लिए विवाह के प्रस्ताव रखे, ताकि वे अपनी स्वतंत्रता को छोड़ दें। लेकिन दयानंद पारिवारिक बंधनों में बंधने को तैयार नहीं थे। 1861 में वे मथुरा पहुंचे और वहां उन्हें स्वामी बृहजनंद के सान्निध्य में गहरी शिक्षा प्राप्त हुई। यह दौर उनके जीवन में निर्णायक मोड़ साबित हुआ। उन्होंने शास्त्रों, पुरानी धार्मिक पुस्तकों और संस्कृत व्याकरण का गहन अध्ययन किया।मथुरा में दयानंद की दार्शनिक नींव मजबूत हुई, और वे ज्ञान प्राप्ति की ओर अग्रसर हुए। इस दौरान उन्होंने अपने नाम के साथ 'सरस्वती' जोड़ा और गुरु बृहजनंद के निर्देशों के तहत वेदों के संदेश को फैलाने के लिए खुद को समर्पित कर दिया। दयानंद ने हिंदू धर्म में व्याप्त कई रूढ़ियों और कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई, लेकिन वे ब्रह्म समाज की विचारधारा से पूरी तरह से सहमत नहीं हो सके, क्योंकि वे वेदों की सर्वोच्चता और आत्मा के पुनर्जन्म को स्वीकार करते थे।अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए, स्वामी दयानंद ने 10 अप्रैल, 1875 को मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की। इसके बाद, उन्होंने देशभर में आर्य समाज की शाखाएं स्थापित करने में अपना शेष जीवन समर्पित किया। उनके सुधारवादी उत्साह ने रूढ़िवादी हिंदू धर्म का विरोध करने वाले लोगों को प्रभावित किया और समाज में जागरूकता लाने का काम किया। अंततः

30 अक्टूबर, 1883 को स्वामी दयानंद की मृत्यु खाद्य विषाक्तता के कारण हो गई, लेकिन उनका योगदान भारतीय समाज और धर्म सुधार में अनमोल रहेगा।

शैक्षिक दर्शन:

स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन को उनकी प्रमुख कृतियों "सत्यार्थ प्रकाश," "वेद भाष्य भूमिका," और "वेद भाष्य" के माध्यम से गहराई से समझा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, उनकी संपादित पत्रिका "आर्य पत्रिका" भी उनके विचारों का महत्वपूर्ण स्रोत है। स्वामी दयानंद ने "सत्यार्थ प्रकाश" के दो अध्यायों (2 और 3) को विशेष रूप से शिशुओं और किशोरों के लिए शिक्षा के संदर्भ में समर्पित किया। इन कार्यों ने उनके शैक्षिक और धार्मिक दृष्टिकोण को प्रकट किया, जो उनकी एक प्रख्यात सुधारक और विचारक के रूप में प्रतिष्ठा को भी स्थापित करते हैं।स्वामी दयानंद ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली की आलोचना की थी, क्योंकि उनके अनुसार यह प्रणाली योग्य और अच्छे छात्रों का निर्माण करने में विफल हो रही थी। उनका मानना था कि एक शिक्षित व्यक्ति को विनम्र और अच्छे चरित्र वाला होना चाहिए, और उसे अपनी भाषा तथा विचारों पर नियंत्रण रखना चाहिए। इसके अलावा, उन्होंने यह भी कहा कि छात्र को अपने माता-पिता, शिक्षकों, बड़ों, और अतिथियों का सम्मान करना चाहिए और सच्चे मार्ग पर चलना चाहिए। उन्हें यह भी विश्वास था कि विद्वानों को दूसरों के आनंद में भागीदार बनना चाहिए और उपहार देने में उदार होना चाहिए।स्वामी दयानंद ने अपनी पुस्तक "व्यवहारभानुक्त" में पंडित विद्वान के गुणों का चित्रण किया और बताया कि किस प्रकार एक मूर्ख व्यक्ति को शिक्षा देने का अधिकार नहीं होना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा केवल सतही ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसमें व्याकरण, साहित्य, वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और आयुर्वेद जैसे गहरे और व्यापक विषयों का अध्ययन भी शामिल होना चाहिए। इसके अलावा, स्वास्थ्य विज्ञान, धनुर्वेद, युद्धकला, गंधर्ववेद, सौंदर्यशास्त्र, अर्थवेद, खगोलशास्त्र, बीजगणित, अंकगणित, भूविज्ञान, और अन्य व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसे विषय भी शिक्षा के दायरे में आने चाहिए।स्वामी दयानंद ने भारत की भाषा, जिसे उन्होंने "आर्यभाषा" कहा, का उपयोग अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने के लिए किया। उनके लिए भाषा केवल ज्ञान और धार्मिक सिद्धांतों के संचार का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह समाज की सशक्तीकरण का एक महत्वपूर्ण उपकरण थी। उन्होंने अंग्रेजी भाषा का विरोध किया और मातृभाषा को समाज की शिक्षा का मुख्य माध्यम माना। उनके अनुसार, एक सशक्त समाज की शिक्षा का सही तरीका मातृभाषा के माध्यम से ही संभव था, न कि अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं के माध्यम से।स्वामी दयानंद का शैक्षिक दर्शन न केवल भारतीय समाज की शिक्षा प्रणाली में सुधार का संकेत था, बल्कि उन्होंने अपने समय की सामाजिक और धार्मिक धारा को भी चुनौती दी। उनका विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि एक व्यक्ति को चरित्र, आदर्श, और समाज के प्रति जिम्मेदारी के लिए तैयार करना होना चाहिए।

स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों और कार्यों ने भारतीय समाज और शिक्षा के क्षेत्र में गहरी छाप छोड़ी। उन्होंने पश्चिमी विज्ञान और प्रौद्योगिकी को आवश्यक माना, लेकिन इसके साथ-साथ भारतीय संस्कृति और वेदों को भी अत्यधिक महत्व दिया। उनका मानना था कि अगर भाषा किसी विशेष वर्ग का विशेषाधिकार नहीं रहती, तो यह सामाजिक एकता को मजबूत करती है और समाज के विकास में सहायक होती है। वेदों को उन्होंने हिंदू संस्कृति की चट्टान और ईश्वर की प्रेरणा माना, और उनका उद्देश्य हिंदू धर्म को इसके निहितार्थ से शुद्ध करना और इसे संस्कृति-संगत आधार प्रदान करना था। इसके लिए उन्होंने "गुड्स बैक टू वेद" का स्पष्ट आह्वान किया।

स्वामी दयानंद का दृष्टिकोण सुधारवादी था और वे पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित नहीं थे। उनका उद्देश्य हिंदू धर्म को सही रूप में प्रस्तुत करना था और भारतीय समाज को आत्मनिर्भर बनाने का था। उन्होंने गुरूकुल और डीएवी कॉलेजों की स्थापना के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो आज भी भारतीय शिक्षा

व्यवस्था के स्तंभों के रूप में स्थापित हैं। स्वामी दयानंद के प्रयासों से भारतीय समाज को पश्चिमी शिक्षा और विचारधारा के प्रभाव से मुक्त होने का मार्ग मिला। उनका योगदान लोकतंत्र, राष्ट्रीय जागृति और स्वराज की भावना को प्रोत्साहित करने में भी था, और वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज शब्द का प्रयोग किया।

स्वामी दयानंद के नेतृत्व में आर्य समाज आंदोलन ने भारतीय समाज में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। इस आंदोलन ने शिक्षा, सामाजिक एकता, और धार्मिक सुधार की दिशा में नई सोच को जन्म दिया। उनके विचारों ने उन भारतीयों को प्रेरित किया जो यूरोपीय सभ्यता की नकल कर रहे थे और अंग्रेजी संस्कृति को अपनाने की कोशिश कर रहे थे। स्वामी दयानंद ने इस प्रवृत्ति का विरोध किया और भारतीय संस्कृति, विचार और सभ्यता की ओर लौटने का आह्वान किया।स्वामी दयानंद की शिक्षा योजना ने भारतीय समाज के सुधार और उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से ही समाज का विकास संभव है। उन्होंने पारंपरिक भारतीय मूल्यों के साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति का संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। उनका उद्देश्य था कि व्यक्ति अपनी आत्मा की चेतना से समाज में बदलाव लाए और सभी सामाजिक बुराइयों का समाधान करे।

स्वामी दयानंद ने महिलाओं की मुक्ति और दबे-कुचले वर्ग के उत्थान के लिए भी संघर्ष किया। उन्होंने मूर्तिपूजा, जातिवाद, कर्मकांड, और भाग्यवाद जैसे सामाजिक बुराइयों का विरोध किया और इन बुराइयों से मुक्ति के लिए समाज को जागरूक किया। वे हिंदू धर्म के वर्चस्व को बनाए रखते हुए इस्लाम और ईसाई धर्म के खिलाफ थे, लेकिन उन्होंने हिंदू समाज में सुधार और एकता का आह्वान किया। उनका विश्वास था कि वैदिक शिक्षा के प्रसार के माध्यम से भारतीय समाज का उत्थान संभव है, और उन्होंने इसके लिए कई महत्वपूर्ण संस्थानों की स्थापना की, जिनमें गुरूकुल और डीएवी कॉलेज प्रमुख हैं।

स्वामी दयानंद का जीवन और उनके विचार भारतीय समाज के सुधार की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुए। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज को जागरूक किया और उसे अंधविश्वास, समाजिक असमानता, और अन्य विकृतियों से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया। उनके योगदान को हमेशा भारतीय समाज में याद किया जाएगा।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने जीवनकाल में भारतीय समाज के लिए एक अहम योगदान दिया, जिसका प्रभाव आज भी देखा जाता है। उनका कार्य मुख्य रूप से सामाजिक सुधार, शिक्षा का प्रसार और धार्मिक उन्नति पर केंद्रित था। उन्होंने पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से भारतीय समाज को मुक्त करने का प्रयास किया और भारतीयों को अपने संस्कृति और धरोहर के प्रति जागरूक किया।स्वामी दयानंद ने स्वराज और भारतीय राष्ट्रवाद के विचारों को प्रोत्साहित किया। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज शब्द का प्रयोग किया और भारत में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने की वकालत की। उनका मानना था कि भारतीयों को अपनी राष्ट्रीय पहचान को बनाए रखना चाहिए और केवल भारतीय वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए। इस संदर्भ में, उन्होंने हिंदी को भारत की राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।दयानंद सरस्वती का योगदान लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण था। उन्होंने स्थानीय सरकारों की स्व-निर्वाचन प्रक्रिया को समर्थन दिया और भारतीय समाज के निचले तबकों की मदद करने के लिए कार्य किया। उनका यह दृष्टिकोण ग्रामीण भारत के उत्थान के लिए था, क्योंकि वे मानते थे कि यदि गांवों को सशक्त किया जाए, तो भारत का सामाजिक और आर्थिक विकास संभव है।

दयानंद सरस्वती ने 1857 में बंबई में पहला आर्य समाज स्थापित किया और बाद में 1877 में लाहौर में भी एक आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज ने भारतीय समाज में शिक्षा, धार्मिकता और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने वेदों के महत्व का प्रचार किया और समाज को जातिवाद, मूर्तिपूजा और अन्य रूढ़िवादियों से मुक्त करने का प्रयास किया।

उनकी शिक्षा नीति का उद्देश्य भारतीय समाज को वैदिक शिक्षा के माध्यम से जागरूक करना और उन्हें धार्मिक एवं नैतिक रूप से सशक्त बनाना था। वे मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य केवल भौतिक ज्ञान नहीं होना चाहिए, बल्कि यह समाज के भीतर नैतिक और आध्यात्मिक सुधार लाने के लिए होना चाहिए।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने महिलाओं के अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया और उनकी शिक्षा पर जोर दिया। उन्होंने समाज के दबे-कुचले वर्गों की स्थिति सुधारने के लिए कई पहल कीं। उनका विचार था कि शिक्षा से ही समाज में समानता और न्याय स्थापित किया जा सकता है।

इस प्रकार, स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान भारतीय समाज के लिए बहुमूल्य था। उनका जीवन और कार्य आज भी भारतीय समाज को प्रेरित करता है और उनके विचारों की प्रासंगिकता समय के साथ और भी बढ़ती जा रही है।स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारतीय समाज में कई महत्वपूर्ण बदलावों की शुरुआत की, जो न केवल धार्मिक सुधार के लिए बल्कि सामाजिक समानता के लिए भी थे। उनका मानना था कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार मिलने चाहिए और उनके जीवन में शुद्ध आचरण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। स्वामी दयानंद की इस शिक्षाओं ने समाज में हलचल मचाई, क्योंकि हिंदू धर्म में प्रचलित कई रिवाज और रीति-रिवाज समय के साथ इतने जटिल हो गए थे कि उन्होंने धर्म की वास्तविक शक्ति को कम कर दिया था।स्वामी दयानंद ने धार्मिक पुनर्निर्माण के लिए शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण माना। उनका यह विश्वास था कि सच्चा हिंदू धर्म तभी उज्जवल हो सकता है जब समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर मिलें और उनका आचरण शुद्ध हो। उनके विचारों ने लाखों युवाओं को पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होने से बचाया और वे फिर से वैदिक धर्म को अपनाने लगे। इसी संदर्भ में, उन्होंने उन हिंदुओं को पुनः संगठित किया जो अन्य धर्मों में परिवर्तित हो गए थे और उन्हें शुद्धि संस्कार के माध्यम से हिंदू धर्म में वापस लाया।स्वामी दयानंद ने महिलाओं के अधिकारों पर बल देते हुए यह कहा कि जब तक महिलाएं मुर्दा प्रथा जैसी कुरीतियों से मुक्त नहीं होतीं, समाज में प्रगति संभव नहीं है। उनका मानना था कि महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया था और उन्हें अज्ञानता के अंधेरे में रखा जाता था। वे मानते थे कि महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना चाहिए, क्योंकि वे अपने गुण और शुद्धता के कारण ही आदर्श मानी जाती हैं, जैसे कि सीता और सावित्री का आदर्श।

स्वामी दयानंद ने अस्पृश्यता का भी विरोध किया और इसे भारतीय समाज का सबसे भयानक अभिशाप बताया। उनका कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति में एक आत्मा होती है, जो सम्मान और स्नेह की पात्र है। वे पूरी तरह से विश्वास करते थे कि जब तक शिक्षा का प्रसार नहीं होगा, तब तक समाज में समानता नहीं आएगी। उनका यह विश्वास था कि हर लड़की को गुरूकुल भेजा जाना चाहिए, ताकि वे शास्त्रों और संस्कृतियों से अवगत हो सकें।स्वामी दयानंद ने सामाजिक समानता की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। उनका मानना था कि सभी वर्गों को एक साथ समान अवसर मिलने चाहिए, चाहे वे उच्च या निम्न जाति से संबंधित हों। उनका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण यह था कि लड़के और लड़कियों को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, और गुरूकुलों में सभी छात्रों को समान आदर्शों से शिक्षा मिलनी चाहिए।

इस प्रकार, स्वामी दयानंद ने भारतीय समाज के लिए एक नए दृष्टिकोण का निर्माण किया, जिसमें समानता, शिक्षा, और सामाजिक न्याय को महत्व दिया गया। उनके विचारों ने समाज में गहरे बदलाव की शुरुआत की और उनकी शिक्षाओं ने भारतीय समाज के सुधार की दिशा में एक अहम कदम उठाया।

आर्य समाज के 10 सिद्धांत:

1. **ईश्वर का अस्तित्व**: ईश्वर सभी सच्चे ज्ञान और ज्ञान के माध्यम से ज्ञात सभी का कुशल कारण है। वह

2. अस्तित्ववान, बुद्धिमान, आनंदित, निराकार, सर्वज्ञ, न्यायी, दयालु, अजन्मा, अनंत और अपरिवर्तनीय है। ईश्वर पूजा करने योग्य है।
3. **वेदों का महत्व**: वेद सभी सच्चे ज्ञान के शास्त्र हैं। यह कर्तव्य है कि सभी व्यक्तियों को वेदों का अध्ययन करना चाहिए, उन्हें पढ़ाना चाहिए और वेदों को सिखाया जाना चाहिए।
4. **सत्य का पालन**: सत्य को स्वीकार करना और असत्य को त्यागने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।
5. **धर्म के अनुसार आचरण**: सभी व्यक्तियों को धर्म के अनुसार चलना चाहिए, जो सही और गलत रास्ते का मार्गदर्शन करता है।
6. **सामाजिक भलाई**: आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का भला करना है, अर्थात् सभी के भौतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक अच्छे को बढ़ावा देना है।
7. **अज्ञान का निवारण**: अविद्या (अज्ञान) को दूर करना चाहिए और विद्या (ज्ञान) को बढ़ावा देना चाहिए। किसी को सिर्फ उसकी भलाई को बढ़ावा देने से संतुष्ट नहीं होना चाहिए, बल्कि सभी की भलाई के लिए काम करना चाहिए।
8. **समाज के नियमों का पालन**: सभी को समाज के नियमों का पालन करना चाहिए और व्यक्तिगत कल्याण के साथ-साथ सामाजिक कल्याण को भी बढ़ावा देना चाहिए।
9. **राजनीतिक दृष्टिकोण**: स्वामी दयानंद राजनीति में आदर्शवादी थे और उन्होंने वेदों से प्रेरणा ली। उनके अनुसार, राज्य का उद्देश्य केवल नागरिकों के धर्मनिरपेक्ष और भौतिक कल्याण को देखना नहीं है, बल्कि धर्म, भौतिक समृद्धि, भोग और मोक्ष का वादा करना है।
10. **कानून का पालन**: स्वामी दयानंद ने कानून को वास्तविक राजा माना और कहा कि कानून ही सच्चा धर्म है। जब सही तरीके से प्रशासित किया जाता है, तो कानून सभी को सुखी करता है, लेकिन जब गलत तरीके से प्रशासित किया जाता है, तो यह राजा को भी बर्बाद कर देता है।
11. **सरकार का कार्य**: स्वामी दयानंद के अनुसार, सरकार समाज की सेवा का एजेंट है, और उसका उद्देश्य समाज के कल्याण के लिए कार्य करना है। सरकार के कार्यों में न्यायपूर्ण और उचित प्रशासन जरूरी है, ताकि समाज में शांति और संतुलन बना रहे।

राजनीतिक विचार और राज्य का सिद्धांत: स्वामी दयानंद ने राज्य के सिद्धांत पर भी ध्यान दिया और उसे एक सुसंगठित प्रशासन के रूप में देखा, जिसका उद्देश्य मानव जीवन के उच्चतम लक्ष्यों की प्राप्ति है। उन्होंने राज्य की भूमिका को केवल भौतिक कल्याण तक सीमित नहीं रखा, बल्कि मानव जीवन के चारों लक्ष्यों—धर्म, अर्थ, भोग और मोक्ष—को सुनिश्चित करने का भी लक्ष्य रखा।

निष्कर्ष:

स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान भारतीय समाज में सुधार के क्षेत्र में अतुलनीय था। उन्होंने शिक्षा, कानून, और समाज के भले के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जो अपने समय से बहुत आगे था। स्वामी दयानंद ने वेदों के प्रति अपनी आस्थाओं और उनके शाश्वत सत्य को समाज में जागरूकता फैलाने के माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने यह विश्वास जताया कि समाज को सच्चे ज्ञान की आवश्यकता है, और यह ज्ञान केवल वेदों में निहित है, जो हर युग में प्रासंगिक रहते हैं। उन्होंने अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, और अनुष्ठानों के प्रति कड़ा विरोध किया और सत्य और नैतिकता के सिद्धांतों को स्थापित किया।स्वामी दयानंद ने समाज के सुधार की दिशा में शिक्षा को महत्वपूर्ण माना। उन्होंने शिक्षा को न केवल बौद्धिक रूप से बल्कि सामाजिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भी

जरूरी समझा। उनके अनुसार, सही शिक्षा से ही व्यक्ति में सच्चे ज्ञान का आभास होता है, जो समाज में बदलाव लाने के लिए आवश्यक है। उन्होंने भारतीय समाज को जागरूक किया कि आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन की ओर बढ़ना आवश्यक है, और इसके लिए शिक्षा सबसे प्रभावी साधन है। उनके इस दृष्टिकोण ने भारतीय समाज में शिक्षा के महत्व को पुनः स्थापित किया और एक नई चेतना उत्पन्न की।कानूनी दृष्टिकोण से, स्वामी दयानंद ने यह स्थापित किया कि केवल राज्य और प्रशासन नहीं, बल्कि एक व्यक्ति को भी अपने जीवन में कानून का पालन करना चाहिए। उन्होंने कानून को सर्वोपरि माना और यह सुनिश्चित किया कि समाज में समानता और न्याय की भावना बनी रहे। वे मानते थे कि जब तक कानून का सही तरीके से पालन नहीं होगा, तब तक समाज में शांति और समृद्धि नहीं आ सकती। इसके साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि न्याय और अधिकार की परिभाषा केवल कानून के माध्यम से होनी चाहिए, न कि किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण से।

स्वामी दयानंद के सिद्धांतों ने समाज में समग्र सुधार की दिशा में एक नई सोच को जन्म दिया। उनके विचारों ने भारतीय समाज को एक नई दिशा दी, जिसमें सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की आवश्यकता थी। उनके द्वारा दिए गए आदर्शों ने भारतीय समाज में सकारात्मक परिवर्तन की संभावनाओं को बढ़ाया, और आज भी उनके विचार हमारे जीवन में प्रासंगिक हैं। उनके सिद्धांत आज भी समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने और एक न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज स्थापित करने की दिशा में प्रेरणा प्रदान करते हैं।

संदर्भ:

1. स्वामी दयानंद सरस्वती: उनके जीवन और कार्य का अध्ययन, 1987
2. छयानंद सरस्वती की आत्मकथा, 1987
3. स्वामी दयानंद सरस्वती गैर-आर्य समाजवादी आंखों के माध्यम से, 1990
4. भगवान दयाल: आधुनिक शिक्षा, बॉम्बे, 1955
5. चौबे, एस.पी. का विकास: कुछ महान भारतीय शिक्षक, आगरा, 1957
6. छाजू सिंह, बावाः दयानंद सरस्वती का जीवन और शिक्षा, लाहोर, 1903